

---

# Shiladakritam Nandikeshvarotpatti Stotram

---

## शिलादकृतं नन्दिकेश्वरोत्पत्तिस्तोत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Shiladakritam Nandikeshvarotpatti Stotram

File name : shilAdakRRitaMnandikeshvarotpattistotram.itx

Category : shiva, lingapurANa, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : lingapurANa | pUrvabhAga | adhyAya 42/26-37||

Latest update : October 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 8, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

## शिलादकृतं नन्दिकेश्वरोत्पत्तिस्तोत्रम्



शिलाद उवाच ।  
भगवन्देवदेवेश त्रियम्बक ममाव्यय ॥ २६ ॥  
पुत्रोऽसि जगतां यस्मात्ताता दुःखाद्धि किं पुनः ।  
रक्षको जगतां यस्मात्पिता मे पुत्र सर्वग ॥ २७ ॥  
अयोनिज नमस्तुभ्यं जगद्योने पितामह ।  
पितः पुत्र महेशान जगतां च जगद्गुरो ॥ २८ ॥  
वत्सवत्स महाभाग पाहि मां परमेश्वर ।  
त्वयाऽहं नन्दितो यस्मान्नन्दी नाम्ना सुरेश्वर ॥ २९ ॥  
तस्मान्नन्दय मां नन्दिन्नमामि जगदीश्वरम् ।  
प्रसीद पितरौ मेऽद्य रुद्रलोकं गतौ विभो ॥ ३० ॥  
पितामहाश्च भो नन्दिन्नवतीर्णे महेश्वरे ।  
ममैव सफलं लोके जन्म वै जगतां प्रभो ॥ ३१ ॥  
अवतीर्णे सुते नन्दीन् रक्षार्थं मह्यमीश्वर ।  
तुभ्यं नमः सुरेशान नन्दीश्वर नमोऽस्तु ते ॥ ३२ ॥  
पुत्र पाहि महाबाहो देवदेव जगद्गुरो ।  
पुत्रत्वमेव नन्दीश मत्वा यत्कीर्तितं मया ॥ ३३ ॥  
त्वया तत्क्षम्यतां वत्स स्तवस्तव्य सुरासुरैः ।  
यः पठेच्छृणुयाद्वापि मम पुत्र प्रभाषितम् ॥ ३४ ॥  
श्रावयेद्वा द्विजान् भक्त्या मया सार्धं स मोदते ।  
एवं स्तुत्वा सुतं बालं प्रणम्य बहुमानतः ॥ ३५ ॥  
मुनीश्वरांश्च सम्प्रेक्ष्य शिलादोवाच सुव्रतः ।  
पश्यध्वं मुनयः सर्वे महाभाग्यं ममाव्ययः ॥ ३६ ॥

नन्दी यज्ञाङ्गणे देवश्चावतीर्णो यतः प्रभुः ।  
मत्समः कः पुमाँल्लोके देवो वा दानवोऽपि वा ॥ ३७ ॥  
एष नन्दी यतो जातो यज्ञभूमौ हिताय मे ॥ ३८ ॥  
इति श्रीलिङ्गमहापुराणे पूर्वभागे नन्दिकेश्वरोत्पत्तिर्नाम  
द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥  
लिङ्गपुराण । पूर्वभाग । अध्याय ४२/२६-३७ ॥

lingapurANa . pUrvabhAga . adhyAya 42/26-37..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Shiladakritam Nandikeshvarotpatti Stotram*

pdf was typeset on October 8, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

